-: भूमिका:-

प्रस्तुत शोध कार्य को करने से पूर्व मैंने राजकुमार हिरानी उर्फ राजू हिरानी की फिल्में कई बार देखी और इनसे काफी प्रभावित भी हुआ। मैंने बहुत पहले से यह सोच रखा था कि जब भी मुझे शोध करने का मौका मिलेगा तो मै राजकुमार हिरानी के व्यक्तित्व, कृतित्व और उनके फ़िल्मों पर काम जरुर करूँगा। जब मैंने राजकुमार हिरानी की पहली फ़िल्म मुन्ना भाई एमबीबीएस को देखा तो उस समय मै काफी कम उम्र का था | किशोरावस्था में मैंने इस फिल्म को देखा और काफी हद तक प्रभावित हुआ लेकिन उस समय शायद यह नही जानता था कि मै भविष्य में फ़िल्मों पर शोध करूँगा। उस समय मुझे शोध का मतलब भी नहीं पता था। धीरे –धीरे फिल्मों में रूचि बढ़ने लगी और फ़िल्म देखने लगा लेकिन राजू हिरानी की फ़िल्मों का हमेशा इन्तजार रहता था। राजू हिरानी की फ़िल्मों को देखकर फ़िल्म देखने और समझने का मेरा नजरिया भी बदला। लगे रहो मुन्नाभाई देखने के बाद से मै राजकुमार हिरानी की फिल्मों का कायल हो गया। चूँकि मै रंगमंच से जुड़ा था और नाटको का मंचन करता था तो मै अब फिल्म भी समझने लगा था और अपनी बौद्धिक क्षमता के अनुसार फिल्म पर चर्चा भी कर लेता था।

राजकुमार हिरानी की खास बात यह हैं कि उन्होने अब तक जितनी भी फ़िल्में बनाई हैं उसकी पटकथा भी उन्होंने खुद लिखी और उनका साथ दिया प्रभास जोशी ने। राजकुमार हिरानी जमीन से जुड़ी कथाओं पर फ़िल्मों का निर्माण करते हैं। उनके फ़िल्म में पात्र से लेकर ट्रीटमेंट सब आम जीवन से प्रभावित और आम लोगो के बीच का होता हैं। मनोरंजन के साथ-साथ एक सार्थक सन्देश और उसके साथ बाक्स आफिस पर रिकॉर्ड तोड़ व्यवसाय तीनो में राजू हिरानी ने महारथ हासिल किया हैं।

हिंदी फिल्मों के इतिहास में सलीम-जावेद की जोड़ी मशहूर रही हैं। दोनों ने अनेक सफल फिल्मों का लेखन किया। दोनों बेहद कामयाब रहे। उन्होंने फिल्मों के लेखक का दर्जा ऊंचा किया। उसे मुंशी से ऊंचे और जरूरी आसन पर बिठाया। उनके बाद कोई भी जोड़ी बहुत कामयाब नहीं

रही। लंबे समय के बाद राजकुमारी हिरानी और अभिजात जोशी की जोड़ी कुछ अलग ढंग से वैसी ही ख्याति हासिल कर रही हैं। अभी देश का हर दर्शक राजकुमार हिरानी के नाम से परिचित हैं। 'मुन्नाभाई एमबीबीएस', 'लगे रहो मुन्नाभाई', '3 इडियट' और 'पीके' के निर्देशक राजकुमार हिरानी ने हिंदी फिल्मों को नई दिशा दी हैं। उन्होंने मनोरंजन की परिभाषा बदल दी हैं। उन्होंने अपनी तीनों फिल्मों से साबित किया हैं कि मनोरंजन के लिए आसान और आजमाए रास्तों पर ही चलना जरूरी नहीं हैं। लकीर छोडऩे पर भी मंजिल तक पहुंचा जा सकता हैं।

सिनेमा मूलतः फ़िल्म निर्देशक की विधा हैं, फिर भी यह एक सामूहिक विधा हैं। इसे मूर्त रूप देने में संवाद लेखक, गीतकार, अभिनेता, संगीत निर्देशक, संपादक आदि की अपनी-अपनी महत्वपूर्ण भूमिका रहती हैं लेकिन सभी निर्देशक के अनुकूल ही काम करते हैं। राजकुमार हिरानी अपनी टीम के सभी सदस्य को उनकी योग्यता दिखाने का भरपूर मौका देते हैं।

राजकुमार हिरानी की फिल्में पूर्ण हास्य के साथ सिस्टम पर व्यंग करती हैं। मुन्नाभाई एम्।बी।बी।एस में जहाँ मेडिकल डिपार्टमेंट पर व्यंग हैं, वही लगे रहो मुन्ना भाई गाँधीवादी सोच को समाज के बीच लोगो मे जागृत करती हैं। थ्री इडियट्स शिक्षा व्यवस्था और रट्टामार शिक्षा का प्रतिरोध कर व्यंग करती हैं, वही पीके धर्म के ठेकेदारो का असली चेहरा दिखाती हैं। यह सारी बात पूरी कामेडी के साथ दर्शकों को बिना बोर किये राजू हिरानी ने बड़े ही आसानी के साथ बता दिया।

हिंदी सिनेमा के इतिहास को देखा जाए तो कामेडी फिल्मों का प्रचलन शुरू से रहा हैं। हाफ टिकट, पड़ोसन, चश्मे बद्दूर, अंगूर आदि फ़िल्मों का नाम कॉमेडी फिल्मों के लिस्ट में हैं। वर्तमान मे एडल्ट कॉमेडी का दौर शुरू हुआ हैं। क्या सुपर कुल हैं हम, मस्ती, दिल्ली बेली, विक्की डोनर , हंटर आदि फ़िल्म एडल्ट कॉमेडी के दायरे मे आती हैं। मेरा यह लघु शोध हिन्दी सिनेमा के तमाम कॉमेडी फिल्मों का विश्लेषण करते हुए समय के साथ हुए कॉमेडी फिल्मों मे परिवर्तन तथा राजकुमार हिरानी

ने फिल्म भाषा की एक नयी हास्य शैली किस तरह से विकसित किया इन तमाम पक्षो पर ध्यान केन्द्रित करते हुए हिन्दी के हास्य फिल्मों पर एक मौलिक शोध हेतु केन्द्रित हैं।

राजकुमार हिरानी का एक कठिन संघर्ष के बाद हिन्दी फ़िल्म इंडस्ट्री मे कम समय में तमाम निर्देशको को पीछे छोड़ते हुए एक बड़ा मुकाम हासिल करना यह साफ तौर पर जाहिर करता हैं कि दर्शकों को कुछ अलग और सार्थक फिल्में चाहिए। जिसे तमाम निर्देशक समझ नही पा रहे हैं और व्यावसायिकता के इस दौर में केवल मनोरंजन को ध्यान मे रखकर फ़िल्म का निर्माण कर रहे हैं।

भूमंडलीकरण के इस दौर मे सिनेमा एक ऐसा माध्यम हैं जो समाज पर गहरा प्रभाव डाल सकता हैं। इसमे फिल्मकार का यह दायित्व बनता हैं कि इसका सही और सार्थक प्रयोग करे। लेकिन बाजारवाद की दौड़ में अधितकांश फ़िल्मकार सिनेमा के साथ न्याय नहीं कर पा रहे हैं। राजकुमार हिरानी एक ऐसे फ़िल्मकार साबित हुए जिंहोने इन समस्यायों पर गहरा विचार किया और हास्य का एक नया और सार्थक रूप अपनी फ़िल्म के द्वारा दर्शकों के सामने लेकर आये। मेरा यह लघु शोध राजकुमार हिरानी के इस शैली के अध्ययन, उनके तमाम साक्षात्कार, उनकी फिल्मों की समीक्षा और उनसे जुड़ी द्वितीयक स्रोतों से प्राप्त जानकारी के आधार पर वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक शोध हैं।